कुछ रिश्ते महज रिश्ते नहीं होते

सुषमा मुनीन्द्र

कुछ रिश्ते महज रिश्ते नहीं होते

सुषमा मुनीन्द्र

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अगस्त, 2023

© सुषमा मुनीन्द्र

अनुक्रम

आइये, हालात पर गौर फरमायें	3
बाँस की फाँस	25
बताशा का बयान	52
इतनी शक्ति इसे देना दाता	76
जल के लिये जालसाजी	104
कभी खुद पर कभी हालात पर रोना आया	121
कुछ रिश्ते महज रिश्ते नहीं होते	151

आइये, हालात पर गौर फरमायें

बहेरा के रोजनामचे में ऐसी भिन्नता अब तक दर्ज नहीं हुई। भिनसारे जब दिवाकर लालिमा बिखेर रहा था, एक खबर फैली... किरणों के प्रचण्ड होने तक दूसरी खबर फैल गई। पहली खबर मामूली लेकिन वांछित थी। दूसरी खबर में ऐसा अतिरेक कि बहेरा खबरों का गढ़ बन गया। बुढ़िया-पुरनिया बताते हैं ऐसा होता नहीं है लेकिन हुआ है। होने को देखा और सुना है। पर अपने गाँव बहेरा में... आँखों के सामने… इतने नजदीक ऐसा हॉरर शो... बप्पा रे। अब तक न हुआ। इस विशाल कच्चे आँगन वाले घर, जिसके अब चार हिस्से हैं, में तीन पीढ़ियाँ अपनी-अपनी आर्थिक क्षमता के अनुसार वास कर रही हैं। अस्सी की हुई काकी गवाह हैं यह घर आर्थिक दृष्टि से उल्लेखनीय नहीं रहा। लेकिन मामखोर शुक्ल जैसे श्रेष्ठ ब्राह्मण वाली प्रतिष्ठा खूब मिली। अब चारों हिस्से के मेम्बरानों के पास बाइक और मोबाइल है, अपने-अपने हिस्से को मजबूत करा लिये हैं पर प्रतिष्ठा धूमिल होती जा रही है। काकी की माने तो आँगन जरूर लाज राखे है।

विशाल कच्चा आँगन।

हिस्सा बाँट में घर चार भागों में विभक्त हो गया है पर आँगन साँझा है। आँगन में चारों घरों के शुभ-अशुभ संस्कार सम्पन्न होते हैं। आँगन ने शुक्ल परिवार की कई पीढ़ियों की मौतें देखी हैं। वर्तमान पीढ़ियों में काकी वरिष्ठतम सदस्य हैं। काकी की बहू सोहाग, काकी को आफत की तरह देखती है लेकिन शेष तीन परिवारों के सदस्य आश्वासन के तौर पर

देखते हैं कि अभी तो ये जीवित हैं, हम इनसे पहले नहीं मरेंगे। आम धारणा है दुर्घटना या व्याधि से ग्रस्त न हो तो आम तौर पर जो जिस क्रम में जन्म लेता है उसी क्रम में इस असार संसार से रुखसत होता है। लेकिन काकी से छोटे दो-चार सदस्य राम को प्यारे क्या हो गये, सदस्यों की आश्वस्ति चली गई। रुखसत होने का क्रम गड़बड़ा भी सकता है। प्रत्येक मौत पर काकी अपराध बोध से शर्मसार हुई अपनी कोठरी में सिकुड़ जाती है। लगता हर चेहरे की दो आँखों में धिक्कार है - जवान-पट्ठे मर रहे हैं, तुम तन्दरुस्त हो। कितनी मौतें देखोगी ? ठीक अभी दो माह पहले काकी के देवर नारद का अच्छा मेहनती पचास साल का पुत्र दयालु नहीं रहा। नारद की पत्नी सती जब मरी तीन बेटियाँ बड़ी और दयालु पन्द्रह का था। चार साल हुये नारद नहीं रहे। अब दयालु ...। लाड़-लोलार के कारण दयालु दसवीं के बाद नहीं पढ़ा लेकिन खेती-काश्तकारी में चित्त लगाकर हैसियत को थोड़ा बढ़ा लिया था। जब दयालु की पत्नी छोटकी लाल साड़ी पहन कर पूजा का थाल सजा कर हरतालिका व्रत के पूजन की तैयारी कर रही थी, कस्बे से बहेरा लौट रहे दयालु की बाइक ओवर लोडेड ट्रक की चपेट में आ गई। दयालु के पढ़ाई पूरी कर रहे दो बेटे, विवाह योग्य हुई बेटी और छोटकी ने कलेजा निचोड़ कर रख देने वाली ऐसी गोहार मारी कि आँगन में खुलने वाले अपने-अपने द्वार से निकल कर सदस्य आँगन में जुहा गये। क्रंदन मिश्रित प्रतिक्रिया से आँगन झनझना गया -

"फगुआ (होली), रक्षाबन्धन पहले ही खुनहाई थी, तीजा भी हो गया। अब तीजा में कबहूँ पूजा न होई।"

"हमसे पहिले, हमसे छोटे मरें, इससे बड़ा क्लेश नहीं है।"